आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023
Received: 09/09/2023; Published: 24/09/2023

कविता

बदलती दुनिया

- डॉ.बिंदु. ए. बी

वही वक्त भी आया था पहले
लड़की के लिए वरदान माँगना।
वहाँ लड़की को उतना आदर,
प्यार ,स्थान देते रहे थे।

वही और एक वक्त भी था
भ्रूण में ही लड़की की हत्या |
लड़की हुए तो वह शाप मानता
उनके रोदन अब भी गूँज रही है।

वही और एक वक्त आया
लड़की या लड़का जो भी हो
आगे बढाने का अवसर सबको दे
लड़की भी दुनिया में अभिमान बने।

लेकिन आज यही वक्त आए हैं

बनी हुई है अपनी बालपन भी डरावट।

नष्ट हुई है भोली बच्ची के

कई अवसर इस समय में।

दुनिया कैसे बदल गई है आज

इन हालातों में मंज़िल के सफर कैसे करूं ?

उनके मंज़िल अब भी दूर है

उसको पाना और भी बाकी है।

****